Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.69
ISSN No. 2456-1665

अनुज लुगुन द्वारा लिखित 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' काव्य में अभिव्यक्त सहजीविता

प्रा.डॉ. नवनाथ गोरक्षनाथ भोंदे
पेमराज सारडा महाविद्यालय, अ.नगर

अनुज लुगुन की कविता 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' समकालीन हिंदी कविता में एक महत्वपूर्ण कृति है, जो आदिवासी समाज, उनके संघर्ष, प्रतिरोध और सहजीविता के दर्शन को रेखांकित करती है। यह कविता आदिवासी जीवन और पूँजीवादी समाज के बीच संघर्ष को दर्शाती है और सहजीविता की अवधारणा को केंद्र में रखती है। सहजीविता केवल पारिस्थितिक तंत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं में भी गहराई से व्याप्त है। यह कविता आदिवासी समाज के भीतर के संकटों को भी उजागर करती है, जहाँ बाहरी शक्तियों के प्रभाव से आंतरिक संरचना में परिवर्तन हो रहा है।

कविता का मूल भाव सहजीविता की उस परंपरा को रेखांकित करना है, जो आदिवासी समाज में सदियों से विद्यमान रही है, लेकिन आधुनिक पूँजीवादी शक्तियों और बाहरी हस्तक्षेपों के कारण संकटग्रस्त हो गई है। अनुज लुगुन की यह रचना केवल आदिवासी समाज की व्यथा को व्यक्त नहीं करती, बल्कि एक व्यापक सामाजिक चेतना का निर्माण करती है, जिसमें सहजीविता को पुनर्स्थापित करने का आह्वान किया गया है। सहजीविता का तात्पर्य परस्पर सहयोग और निर्भरता से है। यह विचार केवल जैविक संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक ताने-बाने में भी इसकी महत्ता है। इस कविता में सहजीविता के विभिन्न आयाम स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं:

1. **प्राकृतिक सहजीविता:**

कविता में जंगल, पेड़, जीव-जंतु और मनुष्य के बीच पारस्परिक संबंध का उल्लेख किया गया है। आदिवासी समाज ने हमेशा प्रकृति को अपने जीवन का अभिन्न अंग माना है। यह सहजीविता मात्र पारिस्थितिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक भी है, क्योंकि जंगल उनकी पहचान का आधार है।

"सुगना मुंडा जंगल का पूर्वज है
और जंगल सुगना मुंडा का
कभी एक लतर था तो दूसरा पेड़,
कभी एक पेड़ था तो दूसरा लतर।"[1]

यह पंक्तियाँ दिखाती हैं कि आदिवासी समाज प्रकृति के साथ विलग नहीं बल्कि उसमें आत्मसात है।

2. **सामाजिक सहजीविता:**

आदिवासी समुदायों में परस्पर सहयोग और सहभागिता का जो तंत्र है, वह मुख्यधारा के समाज से भिन्न है। यहाँ कोई वर्चस्ववादी संरचना नहीं है, बल्कि समाज के सभी वर्गों के बीच समानता और समरसता का भाव है।

"यहाँ हत्यारा कोई नहीं था,
जैविक वनस्पतियों में
युद्ध के बीज कहीं नहीं थे।"[2]

यह उद्धरण दिखाता है कि सहजीविता केवल मनुष्यों के बीच ही नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ भी संतुलन में थी।

3. **आर्थिक सहजीविता:**

आदिवासी समाज श्रम आधारित है और सामूहिकता इसकी आर्थिक संरचना की रीढ़ है। यह समाज उपभोक्तावादी नहीं, बल्कि उत्पादन और उपभोग के बीच सामंजस्य स्थापित करने वाला है। आज जब वैश्वीकरण और पूँजीवाद आदिवासी समाज की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रहे हैं, तो यह सहजीवी व्यवस्था संकट में है।

4. **सांस्कृतिक सहजीविता:**

गीत, नृत्य और परंपराएँ इस समाज में केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि वे एकजुटता और संघर्ष की चेतना को जागृत करने के साधन भी हैं।

"गीत ही जीवन में घुलता है,
जीवन रूपायित होता है गीत में।"[3]

यहाँ गीतों का केवल सांस्कृतिक मूल्य ही नहीं, बल्कि सामूहिक स्मृति और प्रतिरोध की शक्ति भी स्पष्ट होती है। कविता में सुगना मुंडा को जंगल का पूर्वज कहा गया है और जंगल को उसका पूर्वज। यह कथन दर्शाता है कि मनुष्य और प्रकृति के बीच कितनी गहरी आत्मीयता है। दोनों का अस्तित्व एक-दूसरे पर निर्भर करता है। यह संबंध आदिवासी जीवन-दर्शन का आधार है। बाघ को एक रूपक के रूप में प्रयुक्त किया गया है, जो पूँजीवादी और वर्चस्ववादी शक्तियों का प्रतीक है। इस बाघ से संघर्ष करने के लिए सहजीविता आवश्यक है, क्योंकि अकेले व्यक्ति इस हिंसक शक्ति का प्रतिरोध नहीं कर सकते।

"पहाड़ी के उस पार महानगर है,
उसने अपने नाख़ून बढ़ा लिए हैं

उसकी आँखें

पहले से ज़्यादा लाल और प्यासी हैं।"[4]

यह बाघ आदिवासी समाज पर थोपे गए बाहरी खतरों का प्रतीक है।

यह संवाद आदिवासी ज्ञान, परंपरा और सहजीविता की अनिवार्यता को रेखांकित करता है। रीडा हड़म बिरसी को बताता है कि सहजीविता ही आदिवासी समाज की आत्मा है और इसे बचाए बिना अस्तित्व की रक्षा संभव नहीं।

"हमें तादाद के लिए नहीं,

सहजीविता के लिए

अपने सहधर्मियों की खोज करनी होगी।"[5]

यह विचार स्पष्ट करता है कि संघर्ष केवल संख्या से नहीं, बल्कि सामूहिकता और एकजुटता से जीता जाता है।

कविता में डोडे वैद्य अपने सात शिष्यों को सहजीविता का पाठ पढ़ाते हैं। वे बताते हैं कि गणतंत्र की नींव सहजीविता पर टिकी है, और जब यह भावना कमजोर होती है, तो वर्चस्ववादी शक्तियाँ हावी हो जाती हैं।

"गीतों का हास गणतंत्र का हास है,

गीत रहित गणतंत्र प्रभुओं की व्यवस्था है।"[6]

यह विचार लोकतंत्र और सामूहिकता के परस्पर संबंध को उजागर करता है।

कविता इस बात पर भी प्रकाश डालती है कि सहजीविता के अभाव में समाज कैसे विघटित हो रहा है। आज आदिवासी समाज मुख्यधारा की उपभोक्तावादी संस्कृति से प्रभावित होकर अपनी सहजीवी परंपराओं से दूर हो रहा है। पूँजीवाद और भूमंडलीकरण ने सहजीविता को प्रतिस्पर्धा में बदल दिया है, जिससे समाज में असमानता और विघटन बढ़ा है। इसके अतिरिक्त, कविता यह भी बताती है कि सहजीविता के बिना संघर्ष विखंडित हो सकता है, जिससे बाहरी ताकतों को हावी होने का अवसर मिलता है। इसीलिए, रीडा हड़म और बिरसी जैसे पात्र सहजीविता के पुनर्स्थापन के लिए संघर्षरत हैं।

निष्कर्षत: 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' केवल एक कविता नहीं, बल्कि एक सामाजिक-दार्शनिक विमर्श है, जो सहजीविता के महत्व और उसके ह्रास के दुष्प्रभावों को उजागर करता है। यह कविता हमें सहजीविता की पुनर्स्थापना के लिए प्रेरित करती है, क्योंकि यही वह तत्व है जो समाज को संतुलन और समानता प्रदान कर सकता है। सहजीविता के बिना न तो आदिवासी समाज बच सकता है और न ही व्यापक रूप में संपूर्ण मानवता। यह

कविता सहजीवी संस्कृति के अस्तित्व की लड़ाई का दस्तावेज़ है, जो समकालीन दुनिया में एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप करती है।

संदर्भ

1. बाघ और सुगना मुंडा की बेटी- अनुज लुगुन, पृष्ठ-36, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2017

2. वही, पृष्ठ-36

3. वही, पृष्ठ-80

4. वही, पृष्ठ-33

5. वही, पृष्ठ-62

6. वही, पृष्ठ-71